Dr. Shree Nath Singh
Deptt. Of History
Karim City College
Jamshedpur

गांधीवादी आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका

भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी के पदार्पण से राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का नया चरण शुरू हुआ। दक्षिण अफ्रीका में ही अपने संघर्षों के दौरान गांधीजी को महिलाओं की शक्ति का अनुभव हो चुका था। गांधीजी जानते थे कि राष्ट्रीय आंदोलन को सच्चे अर्थों में जनांदोलन बनाने के लिए उसमें महिलाओं को व्यापक भागीदारी बहुत आवश्यक है। गांधीजी ने आदर्श भारतीय नारी की अवधारणा प्रस्तुत किया और महिलाओं को राष्ट्र की सेवा में लग जाने और अपने देश के लिए बलिदान देने का आह्वान किया। गांधीजी ने स्त्री-पुरुष के बीच 'स्वाभाविक श्रम-विभाजन' पर जोर दिया और द्रोपदी, सीता और सावित्री को महिलाओं का आदर्श बताया। गांधीजी का कहना था कि द्रोपदी, सीता और सावित्री में जो गुण थे, वही स्वाधीनता संग्राम में हिस्सेदारी करनेवाली महिलाओं में भी होने चाहिए।

गांधीजी मानना था कि बराबरी का अर्थ यह नहीं है कि महिलाएं वह सब काम करें, जो पुरुष करते हैं। गांधीजी का कहना था कि अपने स्वभाव व क्षमतानुसार सभी को अलग-अलग कार्य करने चाहिए। गांधीजी का मानना था कि घर देखना महिलाओं का मूल कर्तव्य है, किंतु वे विदेशी कपड़ों और शराबों की दुकानों पर धरने देकर स्वदेशी और सत्याग्रह जैसे अहिंसक आंदोलनों में भागीदारी कर राष्ट्र की सेवा कर सकती हैं। इस प्रकार गांधीजी ने महिलाओं को सुधार की वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि एक जागरूक नागरिक और अपने भाग्य-निर्माता के रूप में देखा, जो स्वयं के साथ राष्ट्र का भी भाग्य बदल सकती हैं।

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

UGC ID - 48312

Impact Factor* - 7.8012

Ref IRJMSH 2022 A1014943

DOI : HTTPS://DOI.ORG/10.32804/IRJMSH

ISSN 2277 - 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

THIS CERTIFIES THAT

DR. SHREE NATH SINGH

HAS/HAVE WRITTEN AN ARTICLE / RESEARCH PAPER ON

गांधीवादी आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका

APPROVED BY THE REVIEW COMMITTEE, AND IS THEREFORE PUBLISHED IN

Vol - 13 , Issue - 8 Aug , 2022

IRJMSH

Editor in Chief

www.IRJMSH.com

Google Scholar Academia.edu Computer Science Crossref Academic EBSCO doi